ऋषि विश्वामित्र विद्या फाउंडेशन

प्रस्तुतकर्ता: आचार्य कपिल

अथर्ववेद (१.२.३) मन्त्र विश्लेषण एवं सायण भाष्य

१. मन्त्र एवं पदपाठ

वृक्षं यद्गावः परिषस्वजाना अनुस्फुरं शरमर्चन्त्यृभुम् ।
शरुमस्मद्यावय दिद्युमिन्द्र ॥३॥

पदपाठ: वृक्षम् । यत् । गावः । परिऽसस्वजानाः । अनुऽस्फुरम् । शरम् । अर्चन्ति। ऋभुम् । शरुम् । अस्मत् । यवय । दिद्युम् । इन्द्र ॥ ३ ॥

२. शब्दार्थ एवं अष्टाध्यायी व्याकरणिक टिप्पणी

- **वृक्षम् (धनुष का दण्ड):** यहाँ 'प्रकृति' (वृक्ष/लकड़ी) शब्द का प्रयोग उसके 'विकार' (धनुष) के लिए हुआ है। 'ओव्रश्चू छेदने' धातु से उणादि सूत्र 'स्नुव्रश्चिकृति...' (पा.उ. ३.६६) द्वारा 'क्स' प्रत्यय। 'ग्रहिज्या...' (पा. ६.१.१६) से सम्प्रसारण, 'स्कोः संयोगाद्योः...' (पा. ८.२.२९) से उपधा सकार का लोप, 'व्रश्चभ्रस्ज...' (पा. ८.२.३६) से षत्व और 'षढोः कः सि' (पा. ८.२.४१) से कत्व होकर 'वृक्ष' सिद्ध होता है।
- **गावः (प्रत्यञ्चा / धनुष की डोरी):** गो-विकार (चमड़े/स्नायु से बनी) होने के कारण या बाणों को लक्ष्य तक पहुँचाने (गमयति इषून्) के कारण डोरी को 'गौ' कहा गया है (यास्क निरुक्त २.६)।
- **परिषस्वजानाः (आलिंगन करती हुई / चढ़ाई गई):** धनुष के दण्ड से लिपटी हुई। 'ष्वञ्ज परिष्वङ्गे' धातु से 'छन्दसि लिट्' (पा. ३.२.१०५) और 'लिटः कानज्वा' (पा. ३.२.१०६) से 'कानज्' आदेश।
- **अनुस्फुरम् (कम्पन / प्रतिस्फुरण):** डोरी खींचने पर उत्पन्न होने वाली गति। 'स्फुर संचलने' धातु से 'घञर्थे कविधानम्...' (पा.वा. ३.३.५८) से 'क' प्रत्यय।
- **ऋभुम् (अत्यधिक चमकता हुआ / तीक्ष्ण):** सान (शाण) पर घिसने से तीक्ष्ण किया गया।
- **शरुम् (हिंसक बाण को):** 'शॄ हिंसायाम्' धातु से 'शॄस्वस्निहि...' (पा.उ. १.१०) सूत्र से 'उ' प्रत्यय।
- **अर्चन्ति (छोड़ती हैं / गति देती हैं):** यहाँ 'अर्चति' धातु गति के अर्थ में प्रयुक्त है।
- **दिद्युम् (चमकते हुए अस्त्र / वज्र को):** 'द्युत दीप्तौ' धातु से 'द्युतिगमिजुहोतीनां...' (पा.वा. ३.२.१७८) से क्विप् प्रत्यय और द्विर्वचन।
- **यावय / यवय (दूर करो):** 'यु मिश्रणामिश्रणयोः' धातु से णिच् प्रत्यय। अस्मत् यावय - हमसे पृथक् करो।

- **इन्द्रः** 'इदि परमैश्वर्ये' धातु से 'इन्द्र' शब्द सिद्ध होता है। यास्क (निरुक्त १०.८) के अनुसार जो अन्न (इरा) देता है, अन्न धारण करता है, या प्राणियों को प्रदीप्त करता है।

३. सायण भाष्य का हिन्दी अनुवाद एवं विश्लेषणात्मक प्रमाण

> **सरल अनुवाद:** हे इन्द्र! लकड़ी के धनुष से लिपटी हुई (उस पर चढ़ाई गई) चमड़े की डोरी जब खींचकर छोड़ी जाती है, तब वह जिस चमकते हुए और तीक्ष्ण हिंसक बाण को हमारी ओर छोड़ती है, उस वज्र के समान प्रहार करने वाले बाण को आप हमसे दूर कर दें।

सायण भाष्य का विशेष अलंकार एवं दृष्टान्त:
दार्शनिक संकेत: सायण 'परिषस्वजानाः' (आलिंगन) शब्द के माध्यम से स्पष्ट करते हैं कि जिस प्रकार स्त्री-पुरुष के परस्पर संसर्ग से ही उचित कार्य सिद्ध होता है, उसी प्रकार डोरी (स्त्रीलिंग) और धनुष-दण्ड (पुल्लिंग) के परस्पर सटने (आलिंगन) से ही बाण संधान का कार्य सम्पन्न होता है।

वैकल्पिक अर्थ (श्लेष): सायण एक अत्यंत सुन्दर द्वितीय अर्थ (दृष्टान्त) भी प्रस्तुत करते हैं। जिस प्रकार गर्मी से पीड़ित गाएं (गावः) घनी छाया वाले वृक्ष (वृक्षम्) का आश्रय (आलिंगन) लेती हैं, वैसे ही आजीविका चाहने वाले सैनिक अपने आश्रयदाता स्वामी के इशारों/संकेतों (अनुस्फुरम्) का अनुसरण करते हुए शत्रुओं पर बाण (शरुम्) छोड़ते हैं।

४. मन्त्र का विनियोग (उपयोग)

यह मन्त्र भी पूर्व मन्त्रों की भाँति संग्राम में शत्रुओं के अस्त्र-शस्त्रों (तीक्ष्ण बाणों) से आत्मरक्षा, उन्हें विफल करने और युद्ध में विजय (जयकर्म) प्राप्ति हेतु इन्द्र देवता की प्रार्थना के रूप में विनियुक्त होता है।